# महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय के चतुर्थ दीक्षान्त समारोह में उद्बोधन

स्थान:-रीवा, दिनांक:- एक मई 2013 समय :-

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय के चतुर्थ दीक्षान्त समारोह के अवसर पर मैं विश्वविद्यालय के कुलीन कुल के समस्त सदस्यों-कार्य परिषद,विद्या परिषद व सभा के सदस्यों,आचार्यों,शिक्षकों,पदाधिकारियों,अधिकारियों,कर्मचारियों तथा मंगलमूर्ति विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाऐं तथा बधाईयां देता हूँ एवं विशेष रूप से इस दीक्षान्त समारोह में उपाधि ग्रहण करने वाले सभी छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

दीक्षा-शिक्षा का सुफल है और शिक्षा विद्यार्जन की प्रक्रिया है। विद्या अपने मूल अर्थ में 'सा विद्या या विमुक्तये' को चरितार्थ करने वाली युक्ति है। विद्या जो हमें देती है वह प्रकट है-'विद्या ददाति विनयम्' की उक्ति में। अत: हमारे विश्वविद्यालय अपने प्रमाण-पत्रों,पत्रोपाधियों और उपाधियों के माध्यम से विभिन्न संकायों के विविध विषयों की जो भी शिक्षा देते आ रहे हैं। उस यात्रा का एक सुखद व चरम सोपान यह दीक्षान्त समारोह है जिसमें सहभागी होकर प्रत्येक उपाधिधारक छात्र व छात्रा विश्वविद्यालय व उसके सम्बद्ध महाविद्यालयों में शिक्षार्थ आकर बांछित उपाधियों की उच्च शिक्षा ग्रहण कर तदुपरान्त इस दीक्षान्त समारोह में सुयोग्य एवं आधिकारिक गुरूजनों-संकायाध्याक्षों के हाथों अपनी उपाधियों से विभूषित होकर सेवार्थ अपने कर्मक्षेत्र में प्रवृत्त होने के लिए अग्रसर होते हैं।

आज मैं दीक्षान्त समारोह के इस विशाल मण्डप में उपस्थित विश्वविद्यालय से वर्ष 2010 एवं 2011 में विभिन्न संकायों के विभिन्न विषयों की उपाधियां प्राप्त करने वाले उपाधि धारकों से शिक्षा एवं उनके जीवन विषयों की कुछ बातें यहां रखना चाहता हूँ। सर्वप्रथम जहां तक शिक्षा का संबंध है यह हमें बंधनों से मुक्त कर

हमारे जीवन में उदारता लाती है फलत: हम मानव जीवन में उदारता व रचनाधर्मिता तथा सृजनशीलता का संचार कर पाते हैं। अत: यहां उपस्थित सभी शिक्षार्थियों से मेरी यह अपेक्षा है कि आप सब अपने जीवन में जाति-पांति,ऊंच-नीच,छुआ-छूत की भावनाओं से मुक्त समाज का निर्माण कर देश को इन रूढ़ियों की जंजीरों से मुक्त कर एक समतामूलक राष्ट्र बनाने में अपना बहुमूल्य सहयोग दें।

इसी प्रकार आप सभी शिक्षार्थियों से मेरी एक और अपेक्षा यह भी है कि शिक्षा हमें सुसंस्कृत व सभ्य बनाने का भी एक प्रभावी अस्त्र है अतएव आप सबका यह पुनीत कर्तव्य है कि इस शिक्षा से आप जहां एक ओर अपने आप में नैतिक बल को सुदृढ़ बनाये वहीं दूसरी ओर अपने कर्मक्षेत्र में आपके सम्पर्क में आने वाले लोगों को भी नैतिक शक्तियों के प्रति जागरूक बनायें।इससे विश्वविद्यालय के उच्च शिक्षा प्राप्त हमारे आप सभी उपाधिधारीगण जहां-जहां अपने कर्मक्षेत्र में अपनी सेवायें दे रहे होंगे वहां आस-पास के वातावरण में नैतिकता,सच्चरित्रता एवं ईमानदारी जैसे जीवन मूल्यों का विकास होगा। फलत: हमारे राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को और शक्ति प्राप्त होगी और राष्ट्र में मूल्यों के क्षरण की प्रक्रिया पर विराम लग सकेगा।

शिक्षा के माध्यम से जीवन मूल्यों में विकास का यह काम हमें हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कर्तव्यनिष्ठ व कर्मनिष्ठ बनायेगा जिससे हमारी कार्य संस्कृति परिष्कृत होगी और इसका सीधा असर हमारे राष्ट्रीय चरित्र पर पड़ेगा और तब फिर हम विश्व के जापान जैसे कुशल कार्य संस्कृति वाले नागरिकों की श्रेणी में शामिल होकर एक बार पुन: अपने अतीत के गौरव को प्राप्त कर “सोने की चिडिया” की पदवी को पुन: धारण कर सकेंगे।

आप जैसे उच्च शिक्षित उपाधिधारियों से मैं एक आग्रह और करना चाहूंगा कि आज के वैश्विक जगत के जरूरतों के अनुरूप अब हमें पहले से कहीं अधिक सचेष्ट एवं कर्तव्यनिष्ठ बनना होगा तभी हम विश्व के विकसित देशों के साथ कदम ताल मिलाकर चलते हुये अपने राष्ट्र को विकासशील देश की श्रेणी से ऊपर उठाकर विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में अवस्थित कर पायेंगे। परन्तु इसके लिए सच्ची

कर्तव्यनिष्ठा की महती आवश्यकता है,जो केवल हमारे अनर्तमन से जागृत होने वाली दृढ़ इच्छाशक्ति से ही उद्‌भूत हो सकेगी। आज दीक्षान्त समारोह के इस पावन अवसर पर हम सबको यह संकल्प लेना होगा कि हमसें प्राण-प्रण से उसे पूरा कर स्वयं अपना,अपने संगठन व संस्थान तथा समूचे राष्ट्र का कल्याण सुनिश्चित करने में अपनी गुरूतर भूमिका अदा करें। वस्तुत: यही हमारी शिक्षा का सच्चा ध्येय होना चाहिये।

अंत में आप सभी शिक्षार्थियों को आपके उज्जवल भविष्य के लिये शुभकामनायें एवं बधाई देता हूँ तथा इस विशाल परिसर में उपस्थित समूचे विश्वविद्यालय परिवार के शिक्षकों ,प्राधिकारियों,अधिकारियों,छात्र-छात्राओं तथा नगर से पधारे अतिथिजनों एवं प्रशासनिक अधिकारियों तथा मीडियाकर्मियों को भी समारोह में उपस्थित होने के लिये साधुवाद देता हूँ।

जय हिन्द।